

# भारती विद्यापीठ (अभिमत विश्वविद्यालय)

## स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, पुणे

### पदवी अभ्यासक्रम संगीत (क्रेडिट सिस्टीम) बी.ए. (संगीत) (गायन, वादन) अभ्यासक्रम सत्रानुसार

|   |                         |
|---|-------------------------|
| बी.ए. प्रथम वर्ष (संगीत) (गायन / स्वरवाद्य / तालवाद्य) सत्र - १ | क्रेडिट्स               |
| भाषा (दोन विषय)   | प्रत्येकी ०१<br>क्रेडीट |
| सैद्धांतिक  | ०२                      |
| रंगमंच सादरीकरण   | १४                      |
| मौखिक   | ०७                      |

| क्रमांक | विषयाचे नाव  | विषय क्रमांक | अभ्यासक्रम   |
|---------|--|--------------|--|
| १       | भाषा इंग्रजी                                       | L11          | माहिती पं. सपन चौधरी, पदमा सुब्रमण्यम, पं. शिवकुमार शर्मा, पं. जसराज.  |
| २       | भाषा मराठी   | L12          | चरित्र पं. विष्णू दिगंबर पलुस्कर   |
| ३       | सैद्धांतिक (संगीत) (गायन - वादन) (स्वरलेखन पद्धती) | T11          | १) स्वरलेखन पद्धती (गायन - स्वरवाद्य)<br>अ) स्वरलेखन पद्धतीची संकल्पना आणि उपयोग.<br>ब) स्वरलेखन पद्धतीचा इतिहास.<br>क) भातखंडे आणि पलुस्कर स्वरलेखन पद्धती.<br>२) सांगतिक संकल्पना आणि व्याख्या:<br>नाद, स्वर, शुद्ध स्वर, कोमल स्वर, तीव्र स्वर, श्रुती, स्वरालंकार, राग, आरोह, अवरोह (Aavaroh), थाट, ताल, लय, आवर्तन (Avartan), सम, खाली, खंड इ.<br>प्राचीन संकल्पना: ग्राम, मूर्च्छना इ. |
| ४       | सैद्धांतिक (संगीत) (तालवाद्य) (स्वरलेखन पद्धती)    | T12          | १) स्वरलेखन पद्धती (तालवाद्य)<br>अ) उत्तर हिंदुस्तानी संगीत पद्धती.<br>भातखंडे आणि पलुस्कर स्वरलेखन पद्धती<br>ब) कर्नाटक पद्धती<br>२) विविध ताल लेखन.<br>३) कायदा, तुकडा, परण, तिहाई इ. लेखन.<br>४) सांगतिक संकल्पना आणि व्याख्या:<br>मात्रा, ताल, खंड, सम, काल, ठेका इ.   |
| ५       | प्रात्यक्षिक, रंगमंच सादरीकरण (गायन-वादन)          | P11          | अ) मध्यलय बंदिश / गत. - यमन, भैरव, भूप.<br>ब) वरील उल्लेखित कोणत्याही एका रागात लक्षण गीत / धून.<br>क) तीनताल, एकतालची संपूर्ण माहिती.<br>सूचना-   |

|   |  |     |   |
|---|--|-----|---|
|   |  |     | <p>१. बंदिशीमध्ये स्थाई आणि अंतरा यावर चार – चार आलाप आणि तान आकारात म्हणणे आवश्यक.</p> <p>२. लक्षण गीत गाताना / धून वाजविताना रागाचा आरोह – अवरोह, मुख्य अंग तसेच अर्थ माहिती असणे आवश्यक</p>  |
| ६ | मौखिक (गायन – वादन)                      | V11 | <p><b>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न सूचना –</b></p> <p>१. अभ्यासक्रमात उल्लेखित रागांची संपूर्ण माहिती. उदा- आरोह–अवरोह, स्वर, वर्ज्य स्वर, वादि, संवादी, अनुवादि, विवादी, जाती, गायन समय इ.</p> <p>२. अभ्यासक्रमातील रागांच्या जवळील रागांची नावे.</p> <p>३. व्याख्या – संगीत, राग, ताल.</p> <p>४. ताल तीनताल, एकतालची संपूर्ण माहिती उदा - मात्रा, खंड, टाळी, खाली, ठेका, आणि हातावर टाळी धरून दुगून, तीगुन आणि चौगुन आवश्यक.</p>  |
| ७ | प्रात्यक्षिक, रंगमंच सादरीकरण (तालवाद्य) | P12 | <p><b>वेगवेगळे ताल, ठेका.</b></p> <p><b>तबला:</b></p> <p>अ) तीनताल, एकताल, झपताल, रूपक इ. ताल वेगवेगळ्या लयीत वाजवणे.</p> <p>ब) प्रत्येक तालात एक कायदा, दोन तुकडे, दोन तिहाई आवश्यक.</p> <p><b>पखवाज:</b></p> <p>अ) आदिताल, चौताल, सूलताल, तेवरा इ. वेगवेगळ्या लयीत वाजवणे.</p> <p>आ) प्रत्येक तालात दोन परण, दोन तुकडे, आणि दोन तिहाई वाजविणे आवश्यक.</p> <p><b>सूचना-</b></p> <p><b>तबला –</b></p> <p>१. अभ्यासक्रमातील ताल वेगवेगळ्या लयीत (विलंबित, मध्य, द्रुत) वाजविणे.</p> <p>२. अभ्यासक्रमातील प्रत्येक तालात एक कायदा चार पलटे आणि तिहाई, दोन तुकडे आणि दोन तिहाई आवश्यक.</p> <p><b>पखवाज –</b></p> <p>१. अभ्यासक्रमातील ताल वेगवेगळ्या लयीत (विलंबित, मध्य, द्रुत) वाजविणे.</p> <p>२. अभ्यासक्रमातील प्रत्येक तालात दोन परण, दोन तुकडे, आणि दोन तिहाई वाजविणे आवश्यक</p> |

|   |                  |     |   |
|---|------------------|-----|---|
| ८ | मौखिक (तालवाद्य) | V12 | <p>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न सूचना -</p> <ol style="list-style-type: none"><li>१. अभ्यासक्रमातील इतर ताल वादन.</li><li>२. अभ्यासक्रमात उल्लेखित तालांची संपूर्ण माहिती.<br/>उदा - मात्रा, खंड, टाळी, खाली, ठेका, आणि तालाचा उपयोग इत्यादी.</li><li>३. हातावर टाळी धरून दुगून, तीगुन आणि चौगुन म्हणता येणे आवश्यक.</li><li>४. व्याख्या - संगीत, ताल, कायदा / परण.</li></ol> |
|---|------------------|-----|---|

# भारती विद्यापीठ (अभिमत विश्वविद्यालय)

## स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, पुणे

### पदवी अभ्यासक्रम संगीत (क्रेडिट सिस्टीम) बी.ए. (संगीत) (गायन, वादन) अभ्यासक्रम सत्रानुसार

|   |                         |
|---|-------------------------|
| बी.ए. प्रथम वर्ष (संगीत) (गायन / स्वरवाद्य / तालवाद्य) सत्र – २ | क्रेडिट्स               |
| भाषा (दोन विषय)   | प्रत्येकी ०१<br>क्रेडीट |
| सैद्धांतिक  | ०२                      |
| रंगमंच सादरीकरण   | १४                      |
| मौखिक   | ०७                      |

| क्रमांक | विषयाचे नाव  | विषय क्रमांक | अभ्यासक्रम  |
|---------|--|--------------|---|
| १       | भाषा इंग्रजी   | L21          | माहिती: डॉ. प्रभा अत्रे, पं. भीमसेन जोशी, उ. अल्लारखा, पं. रविशंकर, पं. विरजू महाराज.   |
| २       | भाषा मराठी   | L22          | चरित्र पं. बाळकृष्णबुवा इचलकरंजीकर  |
| ३       | सैद्धांतिक (संगीत) (गायन – वादन) (तालवाद्य) (नृत्य) (भारतीय प्रयोग कलांची ओळख) | T21          | भारतीय प्रयोगजीवी कलांची ओळख<br>अ) कलेची व्याख्या.<br>ब) खालील विविध कला.<br>१) संगीत<br>२) नृत्य<br>३) नाट्य<br>क) वरील प्रयोग कलांचा परस्पर सहसंबंध.  |
| ४       | प्रात्यक्षिक, रंगमंच सादरीकरण (गायन-वादन)                                      | P21          | अ) मध्यलय बंदिश / गत<br>राग: भीमपलास, वृन्दावनी सारंग, दुर्गा<br>आ) सत्र १ आणि २ मधील कोणत्याही दोन रागात विलंबित ख्याल / विलंबित गत ताल व सुरात व्यवस्थित गाता / वाजवता येणे आवश्यक.<br>इ) सत्र १ मधील एका रागात तसेच सत्र २ मधील एका रागात मोठा ख्याल/विलंबित गत गाणे / वाजवणे तसेच यातील कोणत्याही एका रागात किमान ५ आलाप आणि ताना गाता येणे आवश्यक.<br>ई) सत्र २ मधील कोणत्याही दोन रागांमध्ये विस्तारासह मध्यलय बंदिश / गत तसेच उर्वरित दोन रागांमध्ये फक्त मध्यलय बंदिश आवश्यक.<br>उ) ताल विलंबित एकताल, झपतालची संपूर्ण माहिती |

|   |                               |     |  |
|---|-------------------------------|-----|--|
|   |                               |     | <p><b>सूचना-</b></p> <p>१. बंदिशीच्या सुरुवातीला राग वाचक मुक्त आलापी आवश्यक.<br/>(आरोह – अवरोह व्यतिरिक्त )</p> <p>२. बंदिशीमध्ये स्थाई आणि अंतरा यावर सहा – सहा आलाप आणि तान आकारात म्हणणे आवश्यक.</p> <p>३. विलंबित ख्याल / गत ताल व सुरात गाता येणे, मुखडा पकडता येणे आवश्यक.</p>  |
| ५ | मौखिक (गायन – वादन)           | V21 | <p><b>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न.</b></p> <p><b>सूचना –</b></p> <p>१. अभ्यासक्रमातील इतर राग गायन / वादन.</p> <p>२. अभ्यासक्रमात उल्लेखित रागांची संपूर्ण माहिती. उदा- आरोह – अवरोह, स्वर, वर्ज्य स्वर, वादि, संवादी, अनुवादि, विवादी, जाती, गायन समय इ.</p> <p>३. अभ्यासक्रमातील रागांच्या जवळील रागांची नावे.</p> <p>४. गात अथवा वाजवीत असलेल्या प्रकारांची माहिती.</p> <p>५. ताल विलंबित एकताल, झपताल ची संपूर्ण माहिती उदा – मात्रा, खंड, टाळी, खाली, ठेका, आणि हातावर टाळी धरून दुगून, तीगुन आणि चौगुन आवश्यक.</p> <p>६. विलंबित ख्याल / गत गाता / वाजवता येणे अपेक्षित तसेच ताल सुरु असताना मुखडा पकडता येणे.</p>  |
| ६ | रंगमंच सादरीकरण<br>(तालवाद्य) | P22 | <p><b>तबला:</b></p> <p>तीनताल: पेशकार, कायदा, रेला, तुकडा.<br/>झपताल: कायदा, तुकडा, चक्रदार तिहाई</p> <p><b>पखवाज:</b></p> <p>आदीताल: उठाण, प्रस्तार, रेला, तुकडा.<br/>सूलताल: उठाण, प्रस्तार, चक्रदार तिहाई.</p> <p><b>सूचना-</b></p> <p><b>तबला –</b></p> <p>१. अभ्यासक्रमात उल्लेखित ताल तीनतालात पेशकार चार पलटे आणि तिहाई.</p> <p>२. तीनताल आणि झपतालात दोन – दोन कायदे, चार पलटे आणि तिहाई. (वेगवेगळ्या भाषेचे)</p> <p>३. दोन – दोन तुकडे.</p> <p>४. तीनतालात दोन रेले.</p> <p>५. दोन चक्रदार तिहाई.</p> <p><b>पखवाज -</b></p> <p>१. ताल आदीताल आणि सूलतालात दोन उठाण.</p> <p>२. प्रस्तार चार पलटे आणि तिहाई.</p> <p>३. आदीतालात दोन रेले.</p> <p>४. आदीतालात चार तुकडे.</p> <p>५. सूलतालात दोन चक्रदार तिहाई.</p> |

|   |                  |     |   |
|---|------------------|-----|---|
| ७ | मौखिक (तालवाद्य) | V22 | <p>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न.</p> <p>सूचना –</p> <p>तबला / पखवाज</p> <p>१. अभ्यासक्रमातील इतर ताल वादन.</p> <p>२. अभ्यासक्रमातील तालांची दुगून, तीगून, चौगून हातावर टाळी धरून म्हणणे.</p> <p>३. तालांची संपूर्ण माहिती.</p> <p>उदा – मात्रा, खंड, टाळी, खाली, ठेका आणि तालाचा उपयोग इत्यादी.</p> |
|---|------------------|-----|---|

# भारती विद्यापीठ (अभिमत विश्वविद्यालय)

स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, पुणे

पदवी अभ्यासक्रम संगीत (क्रेडिट सिस्टीम)  
बी.ए. (संगीत) (गायन, वादन) अभ्यासक्रम सत्रानुसार

|   |                         |
|---|-------------------------|
| बी.ए. द्वितीय वर्ष (संगीत) (गायन / स्वरवाद्य / तालवाद्य) सत्र - ३ | क्रेडिट्स               |
| भाषा (दोन विषय)   | प्रत्येकी ०१<br>क्रेडीट |
| सैद्धांतिक  | ०२                      |
| रंगमंच सादरीकरण   | १४                      |
| मौखिक   | ०७                      |

| क्रमांक | विषयाचे नाव    | विषय क्रमांक | अभ्यासक्रम   |
|---------|----------------|--------------|--|
| १       | भाषा (हिंदी)   | L31          | हिंदी भाषा आणि हिंदी शब्दांशी ओळख, संगीत कलेमध्ये भाषेचे महत्व, हिंदी शब्दोच्चार, गुरु शिष्य परंपरा.   |
| २       | भाषा (संस्कृत) | L32          | <b>विभाग अ-</b><br>अ) संस्कृत भाषेतील स्वरांत नामे- (अकारांत, आकारांत, इकारांत) व सर्वनामांचा अभ्यास-पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुसकलिंग.<br>आ) तीन काळ (वर्तमानकाळ, भूतकाळ, भविष्यकाळ) (तीन लकार) प्रकारांचा अभ्यास- कालपरिवर्तनाचा अभ्यास<br>इ) वचन अभ्यास- (एकवचन, द्विवचन, बहुवचन) वचन परिवर्तन अभ्यास<br>ई) नाम, सर्वनाम, धातु (क्रियापद) यांच्यातील फरक<br><b>विभाग ब-</b><br>भरत नाट्यशास्त्र, संगीत रत्नाकर व अभिनय दर्पण यातील संगीत व नृत्य विषयातील काही निवडक श्लोकांचा अभ्यास - श्लोकांचा अनुवाद तसेच पाठांतर करून लेखन.<br>1. गीतेनप्रीयतेदेवः .....वंशध्वनिवशंगतः॥<br>2. तस्यगीतस्य .....साधनम् ॥<br>3. गीतंनादात्मकं .....नादाधीनमतस्त्रयं ॥<br>4. आहतो..... भिधीयते ॥<br>5. चैतन्यसर्वभूतानां ..... मुपास्महे ॥<br>6. नकारं .....नादोऽभिधीयते ॥<br>7. व्यवहारे .....द्विगुणोश्चोत्तरोत्तरः॥<br>8. गानक्रियोच्यते .....लक्षणम् ॥ |

|   |  |     |   |
|---|--|-----|---|
|   |  |     | <p>9. स्थित्वास्थित्वा .....परान्वर्थनामकौ ॥</p> <p>10. एतत्समिश्रणाद्वर्णः .....प्रचक्षते ॥</p> <p>11. स्वतोरञ्जयति .....स्वरकारणम् ॥</p> <p>12. श्रुतिभ्यः स्युः .....इतिसप्तते ॥</p> <p>13. रागरागाङ्गभाषा.....तत्त्ववित् ॥</p> <p>14. सर्वस्थानोत्य.....जितश्रमः॥</p> <p>15. शुद्धच्छायालगाभिज्ञः.....सर्वदोषविवर्जितः ॥</p> <p>16. क्रियापरो.....कृभ्दजनोद्धुरः ॥</p> <p>17. सुसंप्रदयो.....मध्यमोमतः॥</p> <p>18. महामहेश्वरेणोक्तः .....रन्जकस्तथा ॥</p> <p>19. चतुर्वेदोभवेच्छब्द.....तल्लक्षणमथोच्यते ॥</p> <p>20. गातृवादकसंघातो.....तत्त्रिधा ॥</p> <p>21. अङ्गिको .....परिकल्पितः ॥</p> <p>22. सात्विकः पूर्वमुक्तस्तु .....मेनिबोधत ॥</p> <p>23. तस्यशिरोहस्तोरः .....चिबुकान्युपाङ्गानि ॥</p> <p>24. अस्यशाखाच .....प्रयोक्तृभिः॥</p> <p>25. अङ्गिकस्तुभवेच्छाखा.....-- तुकारणाश्रयम् ॥</p> <p>26. मुखजेऽभिनयेविप्रा.....मेनिबोधत ॥</p> <p>27. आकम्पितंकम्पितं .....तथाश्रितम् ॥</p> <p>28. निहन्वितं .....त्रयोविधंशिरः॥</p> <p>29. त्रयोदशंविधं .....दृष्टिनामिहलक्षणम् ॥</p> <p>30. कान्ताभयानका .....रसद्रुष्टयः ॥</p> |
| ३ | सैद्धांतिक (संगीत) (गायन – वादन)<br>(राग आणि ताल संकल्पना, योग आणि संगीत)                                | T31 | <p>१) मतंग ऋषीच्या बृहत्देशी मधील राग संकल्पना, राग व्याख्या, थाट संकल्पना, वेगवेगळे थाट, राग आणि थाट यांचे परस्पर संबंध.</p> <p>२) ताल संकल्पना – ताल, ठेका, लय, मात्रा, सम, काल, खंड, दुगून, तीगुन, चौगुन इ. माहिती.</p> <p>३) योग आणि संगीत – प्राणायाम आणि त्याचे महत्व, वेगवेगळ्या मुद्रा, आसने, बसण्याची ठेवण, आवाज साधना, रियाझाचे महत्व.</p>  |
| ४ | सैद्धांतिक (संगीत)<br>(तालवाद्य)<br>(भारतीय तालवाद्यांचा इतिहास आणि भारतीय संगीतात तबला आणि पखवाजचा उगम) | T32 | <p>१) भारतीय संगीतातील तालवाद्यांचा इतिहास (अतिप्राचीन ते आधुनिक कालखंड.)</p> <p>२) भारतीय संगीतातील तबल्याचा उगम आणि उपयोग.</p> <p>३) भारतीय संगीतातील पखवाजचा उगम आणि उपयोग.</p>  |



|   |  |     |  |
|---|--|-----|--|
| ५ | प्रात्यक्षिक –<br>रंगमंच सादरीकरण<br>(गायन – वादन) | P31 | <p>१..खालील रागांमध्ये विस्तारासहित बडाख्याल आणि छोटाख्याल / विलंबित आणि द्रुत गत.<br/>राग: यमन, भीमपलास.</p> <p>२. राग देशकार, बैरागी – मध्यलय बंदिश / गत विस्तारासह.</p> <p>३. सत्र ३ च्या अभ्यासक्रमातील कुठल्याही एका रागात तराणा / वाद्य वादनासाठी तंत्र अंगाची गत.</p> <p>सूचना-</p> <p>१. बंदिशीच्या सुरुवातीला राग वाचक मुक्त आलापी आवश्यक.<br/>(आरोह – अवरोह व्यतिरिक्त)</p> <p>१. बंदिश / गत (विलंबित आणि मध्य) स्थाई आणि अंतरा यावर सात – सात आलाप आणि तान म्हणणे आवश्यक.</p> <p>२. अभ्यासक्रमातील कुठल्याही एका रागात तराणा विस्तारासह.<br/>(वाद्य वादनासाठी तंत्र अंगाची गत – योग्य विस्तारासह)</p>   |
| ६ | मौखिक (गायन – वादन)                                | V31 | <p>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न.</p> <p>सूचना –</p> <p>१. अभ्यासक्रमातील इतर राग आणि गीत प्रकार गायन / वादन.</p> <p>२. अभ्यासक्रमात उल्लेखित रागांची संपूर्ण माहिती. उदा- आरोह – अवरोह, स्वर, वर्ज्य स्वर, वादि, संवादी, अनुवादि, विवादी, जाती, गायन समय इ.</p> <p>३. अभ्यासक्रमातील रागांच्या जवळील रागांचा अभ्यास आवश्यक.<br/>उदा – स्वरूप, आरोह – अवरोह, स्वर, वर्ज्य स्वर, वादि, संवादी, अनुवादि, विवादी, जाती, गायन समय इ.</p> <p>४. गात अथवा वाजवीत असलेल्या प्रकारांची माहिती.</p> <p>५. ख्याल गात असलेल्या / गत वाजवीत असलेल्या विलंबित तालाची संपूर्ण माहिती उदा - मात्रा, खंड, टाळी, खाली, ठेका, आणि हातावर टाळी दाखवणे आवश्यक.</p> <p>६. गत / तराणा यांची माहिती.</p> |
| ७ | रंगमंच सादरीकरण<br>(तालवाद्य)                      | P32 | <p>तबला:</p> <p>खालील तीन घराण्यांची वादन शैली (तीनताल, रूपक)</p> <p>१. दिल्ली: पेशकार, कायदा.</p> <p>२. फरूखाबाद: चलन, रेला.</p> <p>३. बनारस: तुकडा, चक्रदार.</p> <p>पखवाज:</p> <p>खालील तीन घराण्यांची वादन शैली (प्रस्तार, परण, चक्रदार, रेला इ. सहित ) (आदिताल, तेवरा)</p> <p>१. पं. कुदउसिंह महाराज घराणे. घराण्याची भाषा आणि वैशिष्ट्ये</p> <p>२. पं. नाना पानसे घराणे. घराण्याची भाषा आणि वैशिष्ट्ये</p> <p>३. नाथद्वारा (मेवाड) घराणे. घराण्याची भाषा आणि वैशिष्ट्ये</p> <p>सूचना -</p> <p>तबला –</p> <p>१. पेशकार – पाच पलटे आणि तिहाइ.</p> <p>२. चार कायदे वेगवेगळ्या भाषेचे. (विस्तारासह) कमीतकमी पाच</p>   |

|   |                  |     |   |
|---|------------------|-----|---|
|   |                  |     | <p>पलटे आणि तिहाई.</p> <p>३. दोन चलन आणि रेला. कमीतकमी पाच पलटे आणि तिहाई.</p> <p>४. चार तुकडे</p> <p>५. दोन चक्रदार</p> <p><b>पखवाज –</b></p> <p>१. प्रस्तार – पाच पलटे आणि तिहाई.</p> <p>२. तीन परण.</p> <p>३. दोन चक्रदार</p> <p>४. दोन रेला – कमीतकमी पाच पलटे आणि तिहाई</p>  |
| ८ | मौखिक (तालवाद्य) | V32 | <p><b>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न.</b></p> <p><b>सूचना – तबला / पखवाज</b></p> <p>१. अभ्यासक्रमातील इतर ताल वादन.</p> <p>२. तालांची संपूर्ण माहिती. उदा – मात्रा, खंड, टाळी, खाली, ठेका, आणि तालाचा उपयोग इत्यादी.</p> <p>३. अभ्यासक्रमातील तालांची दुगून, तीगून, चौगून हातावर टाळी धरून म्हणणे.</p> <p>४. अभ्यासक्रमात उल्लेखित घराण्यांची संपूर्ण माहिती.</p> |

# भारती विद्यापीठ (अभिमत विश्वविद्यालय)

स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, पुणे

पदवी अभ्यासक्रम संगीत (क्रेडिट सिस्टीम)  
बी.ए. (संगीत) (गायन, वादन) अभ्यासक्रम सत्रानुसार

|   |                         |
|---|-------------------------|
| बी.ए. द्वितीय वर्ष (संगीत) (गायन / स्वरवाद्य / तालवाद्य) सत्र - ४ | क्रेडिट्स               |
| भाषा (दोन विषय)   | प्रत्येकी ०१<br>क्रेडीट |
| सैद्धांतिक  | ०२                      |
| रंगमंच सादरीकरण   | १४                      |
| मौखिक   | ०७                      |

| क्रमांक | विषयाचे नाव    | विषय क्रमांक | अभ्यासक्रम   |
|---------|----------------|--------------|--|
| १       | भाषा (हिंदी)   | L41          | संगीत मे लय का महत्व, संस्कृती - संगीत, हार्मनी-मेलडी, भक्ती संगीत, भारतीय सीनेमा संगीत.   |
| २       | भाषा (संस्कृत) | L42          | <b>विभाग अ- व्याकरण</b><br>अ) सत्र ३ मधील व्याकरणाचा अभ्यास<br>आ) स्वरांत नामे- उकारांत (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुसकलिंग) लिंग विचार व सर्वनामांचा अभ्यास.<br>इ) लोटलकार (आज्ञार्थ) विधिलिलकार (विध्यर्थ) यांचा अभ्यास, लकार ओळखणे तसेच त्याचे वचन यांचा अभ्यास<br>ई) वाच्यपरिवर्तनम्- प्रयोग परिवर्तन<br><b>विभाग ब - श्लोक अभ्यास</b><br>भरत नाट्यशास्त्र, संगीत रत्नाकर व अभिनय दर्पण यातील संगीत व नृत्य विषयातील काही निवडक श्लोकांचा अभ्यास - श्लोकांचा अनुवाद तसेच पाठांतर करून लेखन.<br>१. प्रणम्य शिरसा देवं .....ब्रह्मणा यदुदाहृतम् ॥<br>२. जग्राह ..... रसा नाथर्वणादपि ॥<br>३. श्रुन्गारहास्यकरुणा..... रसा स्मृताः ॥<br>४. ततं चैवावनद्धम्..... लक्षणान्वितम् ॥<br>५. यथा बीजाद्भवेत्..... भावा व्यवस्थिताः ॥<br>६. नानाभिनय .....नाटययोक्त्रुभिः ॥<br>७. वियुताः संयुताश्चैव.....हस्तसंक्षयम् ॥<br>८. नृत्तेभिनययोगेवा .....करणानिप्रयोजयेत् ॥<br>९. प्रसारिताग्रा .....पताकइतिस्मृतः ॥ |

|   |   |     |  |
|---|---|-----|--|
|   |   |     | <p>१०. पताकेतु ..... निबोधत ॥</p> <p>११. स्वस्तिकत्रिपताकौ.....कार्याबुद्धाहदर्शने ॥</p> <p>१२. एकपादप्रचारो .....नामतद्भवेत् ॥</p> <p>१३. चारीभिः प्रस्तुतं .....युद्धेचकीर्तिताः॥</p> <p>१४. स्थितंमध्यं .....प्रयोजयेत् ॥</p> <p>१५. तेमन्द्रमध्यतारख्य .....प्रतिपादिता ॥</p> <p>१६. तैः सप्तभिः .....दुर्दरः॥</p> <p>१७. गजश्चसप्त .....विवद्यपि ॥</p> <p>१८. अनुवादीच .....ययोन्तरगोचरा ॥</p> <p>१९. ग्रामस्वरसमुहः .....आदिमः॥</p> <p>२०. द्वितीयो .....स्वचतुर्थश्रुतिसंस्थिते ॥</p> <p>२१. क्रमात्स्वराणां .....सप्तच ॥</p> <p>२२. तालस्तलप्रतिष्ठायामिति..... प्रतिष्ठितम् ॥</p> <p>२३. कालो ..... बुधैः स्मृतः॥</p> <p>२४. मार्गदेशीगतत्वेन ..... तुकलोच्यते ॥</p> <p>२५. स्यादवपोऽथ .....चतुर्विधा ॥</p> <p>२६. ध्रुवः शम्या .....लक्ष्माभिदध्महे ॥</p> <p>२७. विश्रान्तियुक्तया .....त्रिविधोमतः॥</p> <p>२८. द्रुतोमध्यो .....तस्मान्ममध्यविलम्बितौ ॥</p> <p>२९. तत्ततंसुषिरं ..... भवेत् ॥</p> <p>३०. गीतंततो ऽ वनध्देन ..... सुषिरंमतम् ॥</p> |
| ३ | सैद्धांतिक (संगीत)<br>(गायन – वादन) (विविध गायन प्रकार, समयचक्र, स्वर –श्रुती विभाजन) | T41 | <p>अ) संगीतातील विविध पद्धतीचा अभ्यास<br/>१) धृपद, २) धमार, ३) ख्याल, ४) टप्पा, ५) ठुमरी, ६) दादरा, ७) कजरी, ८) होरी, ९) चैती<br/>ब) समयचक्र, वेगवेगळ्या वेळेचे राग आणि त्यांचे भाव<br/>क) स्वर – श्रुती विभाजन.</p>   |
| ४ | सैद्धांतिक (संगीत)<br>(तालवाद्य) (भारतीय तालावाद्यांचे संगीतातील महत्व व योगदान)      | T42 | <p>भारतीय विविध तालवाद्यांचे संगीतातील महत्व व योगदान, खाली नमुद केलेल्या संगीतातील महत्व व योगदान.<br/>१) शास्त्रीय गायन (ख्याल – धृपद),<br/>२) शास्त्रीय वादन,<br/>३) नृत्य<br/>४) उपशास्त्रीय,<br/>५) सुगम.<br/>६) लोक संगीत</p>  |
| ५ | प्रात्यक्षिक - रंगमंच सादरीकरण (गायन – वादन)  | P41 | <p>अ) विस्तारासहित बडाख्याल आणि छोटाख्याल / विलंबित आणि द्रुत गत.<br/>रागः वृन्दावनी सारंग, भूप.<br/>ब) काफी , देश या रागांमध्ये विस्तारासह मध्यलय बंदिश<br/>क) चतरंग / तंत्र अंगाची गत – सत्र १ ते ४ मधील कोणत्याही एका</p>   |

|   |                            |     |  |
|---|----------------------------|-----|--|
|   |                            |     | <p>रागामध्ये.</p> <p>ड) खालीलपैकी कोणत्याही एका रागात दादरा.<br/>देश, काफी, खमाज, पिलू.</p> <p>इ) विलंबित तीनताल, तिलवाडा आणि दादरा तालांची माहिती सूचना-</p> <p>१. बंदिशीच्या सुरुवातीला राग वाचक मुक्त आलापी आवश्यक.<br/>(आरोह – अवरोह व्यतिरिक्त)</p> <p>२. बंदिश / गत ( विलंबित आणि मध्य) स्थाई आणि अंतरा यावर आठ – आठ आलाप आणि तान म्हणणे आवश्यक.</p> <p>३. चतरंग – गायन / तंत्र अंगाची गत विस्तारासह.</p> <p>४. अभ्यासक्रमात उल्लेखित कोणत्याही एका रागामध्ये दादरा योग्य विस्तारासह.</p>  |
| ६ | मौखिक (गायन – वादन)        | V41 | <p>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न.</p> <p>सूचना –</p> <p>१. अभ्यासक्रमातील इतर राग गायन / वादन.</p> <p>२. अभ्यासक्रमात उल्लेखित रागांची संपूर्ण माहिती. उदा- आरोह – अवरोह, स्वर, वर्ज्य स्वर, वादि, संवादी, अनुवादि, विवादी, जाती, गायन समय इ.</p> <p>३. अभ्यासक्रमातील रागांच्या जवळील रागांचा अभ्यास आवश्यक.<br/>उदा – स्वरूप, आरोह – अवरोह, स्वर, वर्ज्य स्वर, वादि, संवादी, अनुवादि, विवादी, जाती, गायन समय इ.</p> <p>४. गात अथवा वाजवीत असलेल्या प्रकारांची माहिती.</p> <p>५. अभ्यासक्रमात उल्लेखित तालांची संपूर्ण माहिती उदा – मात्रा, खंड, टाळी, खाली, ठेका आणि हातावर टाळी धरून दुगून, तीगुन आणि चौगुन करणे आवश्यक.</p> <p>६. चतरंग – गायन पद्धती / तंत्र अंगाची गत यांची माहिती.</p> |
| ७ | रंगमंच सादरीकरण (तालवाद्य) | P42 | <p>तबला:</p> <p>रूपक, झपताल या तालांमध्ये खालील प्रकारांच्या आधारे वादन</p> <p>१) पेशकार: सहा पलटे आणि तिहाई.</p> <p>२) कायदा: तीश्र जाती आणि चतुश्र जाती,</p> <p>३) रेला: धिरधिर किटतक,</p> <p>४) तुकडा</p> <p>५) गत – मध्यलय, द्रुतलय.</p> <p>६) चक्रदार</p> <p>७) फर्माईशी चक्रधार (वादन तसेच गणितीय विचार)</p> <p>पखवाज:</p> <p>तेवरा, सुलताल या तालांमध्ये खालील प्रकारांच्या आधारे वादन</p> <p>१) उठान २) प्रस्तार ३) चलन: तीश्र जाती आणि चतुश्र जाती</p> <p>४) परन ५) चक्रदार ६) रेला ७) फर्माईशी चक्रधार (वादन तसेच गणितीय विचार) ८) वरील कोणत्याही एका तालात एक नौहक्का.</p> <p>सूचना-</p> <p>तबला -</p> <p>१. दोन्ही तालात पेशकार: सहा पलटे आणि तिहाई.</p>   |

|   |                  |   |
|---|------------------|---|
|   |                  | <p>२. दोन्ही तालांमध्ये दोन तीश्र जाती कायदे आणि दोन चतुश्र जाती कायदे वेगवेगळ्या भाषेचे.(विस्तारासह)कमीतकमी सहा पलटे आणि तिहाई.</p> <p>३. दोन्ही तालांमध्ये दोन रेला. कमीतकमी सहा पलटे आणि तिहाई.</p> <p>४. चार ते पाच तुकडे ( विविध प्रकार आणि भाषांचे)</p> <p>५. दोन्ही तालांमध्ये दोन ते तीन चक्रदार</p> <p>६. दोन्ही तालांमध्ये तीन गती</p> <p>७. दोन्ही तालांमध्ये एक – एक फर्माईशी चक्रधार (वादन तसेच गणितीय विचार)</p> <p><b>पखवाज -</b></p> <p>१. दोन्ही तालांमध्ये उठान</p> <p>२. प्रस्तार – दोन्ही तालांमध्ये कमीतकमी सहा पलटे आणि तिहाई.</p> <p>३. दोन्ही तालांमध्ये तीन – तीन परण.</p> <p>४. दोन्ही तालांमध्ये तीन चक्रदार (त्यातील एक चक्रधार फर्माईशी असणे आवश्यक)</p> <p>५. दोन्ही तालांमध्ये दोन दोन रेला. कमीतकमी सहा पलटे आणि तिहाई.</p> <p>६. दोन्ही तालांमध्ये चलन: तीश्र जाती आणि चतुश्र जाती.</p> <p>७. या सत्रातील अभ्यासक्रमात देण्यात आलेल्या कोणत्याही एका तालात नौहक्का आवश्यक.</p> |
| ८ | मौखिक (तालवाद्य) | <p>V42</p> <p><b>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न.</b></p> <p><b>सूचना – तबला / पखवाज</b></p> <p>१. अभ्यासक्रमातील इतर तालांचे वादन.</p> <p>२. अभ्यासक्रमातील तालांची संपूर्ण माहिती.<br/>उदा – मात्रा, खंड, टाळी, खाली, ठेका, आणि तालाचा उपयोग इत्यादी.</p> <p>३. वादनातील सर्व प्रकारांची व्याख्या आणि शास्त्रीय माहिती.</p> <p>४. फर्माईशी चक्रधार वादन आणि गणितीय विचार.</p>  |

# भारती विद्यापीठ (अभिमत विश्वविद्यालय)

## स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, पुणे

### पदवी अभ्यासक्रम संगीत (क्रेडिट सिस्टीम) बी.ए. (संगीत) (गायन, वादन) अभ्यासक्रम सत्रानुसार

|  |           |
|--|-----------|
| बी.ए. तृतीय वर्ष (संगीत) (गायन /<br>स्वरवाद्य / तालवाद्य) सत्र - ५ | क्रेडिट्स |
| सैद्धांतिक   | ०२        |
| रंगमंच सादरीकरण  | १५        |
| मौखिक  | ०८        |

| क्रमांक | विषयाचे नाव  | विषय क्रमांक | अभ्यासक्रम   |
|---------|--|--------------|--|
| १       | सैद्धांतिक (संगीत)<br>(गायन -<br>वादन)(घराण्याची<br>ओळख, शास्त्रीय, उप<br>शास्त्रीय व सुगम<br>संगीत पद्धती,<br>महाराष्ट्राचे लोक<br>संगीत) | T51          | १) घराण्यांची ओळख<br>घराण्याची व्याख्या<br>घराण्याची आवश्यकता<br>विविध घराणी व वैशिष्ट्ये<br>२) शास्त्रीय, उपशास्त्रीय व सुगम संगीताची माहिती<br>ख्याल<br>ठुमरी, नाट्यगीत<br>गझल, सुगम<br>३) महाराष्ट्रातील लोकसंगीत<br>भारूड, गोंधळ, पोवाडा, कीर्तन.  |
| २       | सैद्धांतिक (संगीत)<br>(तालवाद्य)<br>(शास्त्रीय आणि<br>उप शास्त्रीय<br>संगीताची साथ<br>सांगत)   | T52          | खाली नमूद केलेल्या संगीत प्रकारांना साथ संगत<br>ख्याल, धृपद, स्वरवाद्य, उपशास्त्रीय (ठुमरी, दादरा, टप्पा इ.)   |
| ३       | प्रात्यक्षिक रंगमंच<br>सादरीकरण (गायन-<br>वादन)  | P51          | आ) बिहाग, जौनपुरी रागांमध्ये विस्तारासहित बडाख्याल आणि छोटा<br>ख्याल / विलंबित आणि द्रुत गत.<br>ब) राग किरवाणी, मालकंस - विस्तारासह मध्यलय बंदिश / गत<br>क) आत्तापर्यंतच्या कुठल्याही एका रागात धृपद, (आलाप, जोड, बंदिश /<br>वाद्यवादनासाठी धृपद अंगाची गत आवश्यक)<br>ड) एक नाट्यगीत.<br>इ) चौताल, रूपक, केहेरवा इ. तालांचा अभ्यास.. |

|   |                            |     |  |
|---|----------------------------|-----|--|
|   |                            |     | <p><b>सूचना-</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. बंदिशीच्या / गतीच्या सुरुवातीला राग वाचक मुक्त आलापी आवश्यक. (आरोह - अवरोह व्यतिरिक्त)</li> <li>२. बंदिशीमध्ये (विलंबित आणि द्रुत) स्थाई आणि अंतरा यावर आठ - आठ आलाप आणि तान म्हणणे आवश्यक. ज्यापैकी काही आकारात, काही ताना नोटेशन मध्ये, काही ताना समेवर तर काही ताना कालात संपणाऱ्या, तसेच बोल आलाप आणि बोलताना आवश्यक. वाद्यवादनासाठी गतीच्या स्थायी आणि अंतरा यावर आठ - आठ आलाप आणि तान आवश्यक. ज्यामध्ये विविध मात्रेपासून सुरु होणाऱ्या ताना, तिहाईयुक्त ताना अशा विविध प्रकारच्या तानांचा अंतर्भाव असणे आवश्यक.</li> <li>३. मध्यलयीसाठी दिलेल्या रागात सुरुवातीला राग वाचक मुक्त आलापी, बंदिश, स्थाई व अंतरा यावर आठ - आठ आलाप आणि तान आवश्यक.</li> <li>४. धृपद, धमार - गायन पद्धती विस्तारासह. (आलाप, जोड, बंदिश / वाद्यवादनासाठी धृपद अंगाची गत आवश्यक)</li> </ol> |
| ४ | मौखिक (गायन - वादन)        | V51 | <p><b>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न.</b></p> <p><b>सूचना -</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. अभ्यासक्रमातील इतर राग आणि गीत प्रकार गायन / वादन.</li> <li>२. अभ्यासक्रमात उल्लेखित रागांची संपूर्ण माहिती. उदा- आरोह - अवरोह, स्वर, वर्ज्य स्वर, वादि, संवादी, अनुवादि, विवादी, जाती, गायन समय इ.</li> <li>३. अभ्यासक्रमातील रागांच्या जवळील रागांचा अभ्यास आवश्यक. उदा - स्वरूप, आरोह - अवरोह, स्वर, वर्ज्य स्वर, वादि, संवादी, अनुवादि, विवादी, जाती, गायन समय आणि रागांची तुलना इ.</li> <li>४. गात अथवा वाजवीत असलेल्या प्रकाराची माहिती.</li> <li>५. अभ्यासक्रमात उल्लेखित तालांची संपूर्ण माहिती उदा - मात्रा, खंड, टाळी, खाली, ठेका आणि हातावर टाळी धरून दुगून, तिगून आणि चौगुन करणे आवश्यक.</li> <li>६. धृपद बदल माहिती, उदा - उगम, बानी इत्यादीची विस्तृत माहिती.</li> </ol>                         |
| ५ | रंगमंच सादरीकरण (तालवाद्य) | P52 | <p><b>तबला -</b></p> <p><b>अ. ताल झपताल, एकताल विस्तृत सादरीकरण</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. पेशकार - आठ पलटे आणि तिहाई.</li> <li>२. कायदा - तीन कायदे प्रत्येक कायद्यात आठ पलटे आणि तिहाई.</li> <li>३. रेला - दोन, पाच पलटे आणि तिहाई.</li> <li>४. परण - तीन.</li> <li>५. तुकडे - चार</li> <li>६. चक्रदार - दोन. (एक फर्माईशी चक्रधार)</li> </ol>  |



|  |  |  |
|--|--|--|
|  |  | <p>ब) खालील तालांचे प्रस्तुतीकरण आणि माहिती.<br/>(खालील सर्व ताल (ठेका) परीक्षकांनी दिलेल्या लयीत वाजविता येणे आवश्यक)</p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१) ख्यालगायकीत वापरले जाणारे विलंबित ताल, एकताल, झुमरा, तिलवाडा.</li> <li>२) स्वरवाद्यासाठी वापरले जाणारे विलंबित ताल तीनताल, झपताल, रूपक.</li> <li>३) मध्यलय ताल (गायन, वादन, नृत्य) तीनताल, झपताल, रूपक</li> <li>४) ठुमरी – गझल मध्ये वापरले जाणारे ताल: लग्गी, लडी. रूपक, केरवा, दादरा.</li> </ol> <p><b>पखवाज -</b></p> <p>अ) ताल सूलताल, चौताल विस्तृत सादरीकरण.</p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. उठाण</li> <li>२. स्तुतीपरण / श्लोक परण</li> <li>३. प्रस्तार – आठ पलटे आणि तिहाई.</li> <li>४. परण – चार</li> <li>५. रेला – दोन, पाच पलटे आणि तिहाई.</li> <li>६. तुकडे – चार</li> <li>७. चक्रदार – दोन (एक फर्माईशी आवश्यक)</li> </ol> <p>ब) खालील तालांचे प्रस्तुतीकरण आणि माहिती.<br/>(खालील सर्व ताल (ठेका) परीक्षकांनी दिलेल्या लयीत वाजविता येणे आवश्यक)</p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. ध्रुपद धमारच्या साथसंगतीसाठी उपयोगात येणाऱ्या तालांचे सादरीकरण.<br/>चौताल, सूलताल, आदिताल</li> <li>२. लोक संगीताच्या साथीचे तालांचे सादरीकरण, लग्गी चे सादरीकरण (चार ते पाच प्रकार).<br/>धुमाळी, केरवा, भजनी ठेका.</li> <li>३. नृत्याच्या साथसंगतीमध्ये उपयुक्त ताल तीनताल, धमार, मत्त.</li> </ol> <p><b>सूचना-</b><br/><b>तबला -</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. ख्यालगायकी मध्ये वापरले जाणारे विलंबित तालांचे सादरीकरण (वादन पद्धती, ठेक्यांचे प्रकार).</li> <li>२. स्वरवाद्यासाठी वापरले जाणारे विलंबित तालांचे सादरीकरण (वादन पद्धती, ठेक्यांचे प्रकार).</li> <li>३. अभ्यासक्रमात उल्लेखित मध्यलय तालांचे सादरीकरण (वादन पद्धती, ठेक्यांचे प्रकार).</li> <li>४. ठुमरी – गझल मध्ये वापरले जाणारे तालांचे सादरीकरण (वादन पद्धती), ठेक्यांचे प्रकार, आणि लग्गी-लडी चे सादरीकरण (चार ते पाच प्रकार).</li> </ol> |
|--|--|--|

|   |                  |     |  |
|---|------------------|-----|--|
|   |                  |     | <p><b>पखवाज -</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. धृपद धमारच्या साथसंगतीसाठी उपयोगात येणाऱ्या तालांचे सादरीकरण (वादन पद्धती).</li> <li>२. लोक संगीतात उपयुक्त तालांचे सादरीकरण (वादन पद्धती), लग्गी - लडीचे सादरीकरण (चार ते पाच प्रकार).</li> <li>३. नृत्याच्या साथ संगतीमध्ये उपयुक्त तालांचे सादरीकरण. (वादन पद्धती)</li> <li>४.</li> </ol>   |
| ६ | मौखिक (तालवाद्य) | V52 | <p><b>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न.</b></p> <p><b>सूचना -</b></p> <p><b>तबला -</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. ताल झपताल आणि एकतालची संपूर्ण माहिती, हातावर टाळी देऊन दुगून, तीगुन आणि चौगुन म्हणणे.</li> <li>२. ख्याल गायकी, स्वरवाद्य, नृत्य, ठुमरी, गझल इत्यादी गायन आणि नृत्य प्रकारांच्या साथसंगतीसाठी वापरल्या जाणाऱ्या तालांचा संपूर्ण शास्त्रीय अभ्यास. उदा - एकूण मात्रा, टाळी, खाली, सम, खंड, आवर्तन आणि तालांची दुगून, तीगुन आणि चौगुन इत्यादी.</li> </ol> <p><b>पखवाज -</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१, ताल सूलताल आणि चौतालची संपूर्ण माहिती, हातावर टाळी देऊन दुगून, तीगुन आणि चौगुन म्हणणे.</li> <li>२. धृपद धमार गायकी, नृत्य, लोकसंगीत इत्यादी गायन आणि नृत्य प्रकारांच्या साथसंगतीसाठी वापरल्या जाणाऱ्या तालांचा संपूर्ण शास्त्रीय अभ्यास. उदा - एकूण मात्रा, ताली, खाली, सम, खंड, आवर्तन आणि तालांची दुगून, तीगुन आणि चौगुन इत्यादी.</li> </ol> |

# भारती विद्यापीठ (अभिमत विश्वविद्यालय)

स्कूल ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, पुणे

पदवी अभ्यासक्रम संगीत (क्रेडिट सिस्टीम)  
बी.ए. (संगीत) (गायन, वादन) अभ्यासक्रम सत्रानुसार

|   |           |
|---|-----------|
| बी.ए. तृतीय वर्ष (संगीत) (गायन / स्वरवाद्य / तालवाद्य) सत्र - ६ | क्रेडिट्स |
| सैद्धांतिक  | ०२        |
| रंगमंच सादरीकरण   | १५        |
| मौखिक   | ०८        |

| क्रमांक | विषयाचे नाव   | विषय क्रमांक | अभ्यासक्रम  |
|---------|---|--------------|---|
| १       | सैद्धांतिक (संगीत)<br>(गायन - स्वरवाद्य - तालवाद्य)<br><br>(संगीतकार व संगीततज्ञ, भारतीय वाद्यांचे वर्गीकरण, संगीताचे सौंदर्यशास्त्र) | T61          | १) संगीतकार आणि संगीततज्ञ,<br>उ. अब्दुल करीम खान, पं. विष्णू नारायण भातखंडे<br>पं. विष्णू दिगंबर पलुस्कर, उ. अमीर हुसैन खान<br>पं. रवीशंकर, लता मंगेशकर, पं. अरविंद मुळगावकर.<br>२) भारतीय वाद्यांचे वर्गीकरण<br>सुषिर<br>तंतू<br>अवनद्ध<br>घन<br>३) संगीतातील सौंदर्यशास्त्र<br>सौंदर्यशास्त्र - व्याख्या<br>सौंदर्यशास्त्र - मूलतत्वे<br>स्वर, लय, ताल, शब्द (तालवाद्यांसाठी भाषा) सौंदर्य.   |
| २       | प्रात्यक्षिक रंगमंच सादरीकरण (गायन-वादन)  | P61          | अ) पुरिया धनाश्री, मिया मल्हार या रागांमध्ये विस्तारासहित बडाख्याल, छोटा ख्याल / विलंबित आणि द्रुत गत.<br>ब) हंसध्वनी, मधुवंती या रागांमध्ये छोटा ख्याल / मध्यलय गत.<br>क) भावगीत, गझल यापैकी कोणतेही एक.<br>ड) अभ्यासक्रमातील कोणत्याही एका रागात ठुमरी आवश्यक.<br>इ) दीपचंदी, झुमरा, जत या तालांचा अभ्यास:<br>सूचना -<br>१. बंदिशीच्या सुरुवातीला राग वाचक मुक्त आलापी आवश्यक.<br>(आरोह - अवरोह व्यतिरिक्त)<br>२. बंदिशीमध्ये (विलंबित आणि मध्य) स्थाई आणि अंतरा यावर दहा - दहा आलाप आणि तान म्हणणे आवश्यक. ज्यापैकी काही ताना आकारात, काही ताना नोटेशन मध्ये, काही ताना समेवर तर काही ताना कालात संपणाऱ्या, तसेच बोल आलाप, बोलतान आणि लयकारी आवश्यक. वाद्यवादनासाठी गतीच्या स्थायी आणि अंतरा |

|   |                            |     |   |
|---|----------------------------|-----|---|
|   |                            |     | <p>यावर दहा – दहा आलाप आणि तान आवश्यक. ज्यामध्ये विविध मात्रेपासून सुरु होणाऱ्या ताना, तिहाईयुक्त ताना अशा विविध प्रकारच्या तानांचा अंतर्भाव असणे आवश्यक.</p> <p>३. छोटा ख्याल / मध्यलय गत साठी दिलेल्या रागांमध्येसुद्धा वरील प्रमाणे सर्व घटक आवश्यक.</p> <p>४. भावगीत, गझल यापैकी कोणतेही एक त्याच्या शैलीनुसार योग्य विस्तारासह सादर करणे आवश्यक.</p> <p>५. ठुमरी योग्य विस्तारासह सादर करणे आवश्यक.</p> <p>६. उल्लेखित सर्व तालांचा अभ्यास, हातावर टाळी धरून म्हणण्याची क्षमता.</p>  |
| ३ | मौखिक (गायन-वादन)          | V61 | <p><b>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न सूचना –</b></p> <p>१. अभ्यासक्रमातील इतर राग गायन / वादन.</p> <p>२. अभ्यासक्रमात उल्लेखित रागांची संपूर्ण माहिती. उदा- आरोह – अवरोह, स्वर, वर्ज्य स्वर, वादि, संवादी, अनुवादि, विवादी, जाती, गायन समय इ.</p> <p>३. अभ्यासक्रमातील रागांच्या जवळील रागांचा अभ्यास आवश्यक. उदा – स्वरूप, आरोह – अवरोह, स्वर, वर्ज्य स्वर, वादि, संवादी, अनुवादि, विवादी, जाती, गायन समय आणि जवळच्या रागांची तुलना इ.</p> <p>४. गात अथवा वाजवीत असलेल्या प्रकाराची माहिती.</p> <p>५. भावगीत, गझल यांची माहिती असणे आवश्यक.</p> <p>६. ठुमरी बद्दल संपूर्ण माहिती – उत्पत्ती, विकास, गायन पद्धती, घराण्यांची माहिती इत्यादी.</p> <p>७. अभ्यासक्रमात उल्लेखित तालांची संपूर्ण माहिती उदा - मात्रा, खंड, टाळी, खाली, ठेका, आणि हातावर टाळी धरून दुगून, तीगुन आणि चौगुन करणे आवश्यक.</p> |
| ४ | रंगमंच सादरीकरण (तालवाद्य) | P62 | <p><b>तबला –</b></p> <p><b>अ) ताल एकतालचे विस्तृत सादरीकरण.</b></p> <p>१. पेशकार – दहा पलटे आणि तिहाई.</p> <p>२. कायदा – चार कायदे प्रत्येक कायद्याचे दहा पलटे आणि तिहाई.</p> <p>३. रेला – तीन, सहा पलटे आणि तिहाई.</p> <p>४. परण – तीन.</p> <p>५. तुकडे – पाच</p> <p>६. चक्रदार – तीन.</p> <p>७. चौपल्ली – एक</p> <p><b>ब) ताल मत्त/बसंत -</b></p> <p>१. कायदा – दोन कायदे प्रत्येक कायद्याचे ६ पलटे आणि तिहाई</p> <p>२. रेला – दोन रेला (धिरधीर, दिगनग)</p> <p>३. चक्रधार- दोन (एक फर्माईशी)</p> <p>४. तुकडे- तीन</p> <p>५. त्रिपल्ली- एक</p>   |

|  |  |  |   |
|--|--|--|---|
|  |  |  | <p><b>पखवाज -</b></p> <p><b>अ) ताल चौतालचे विस्तृत सादरीकरण.</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. उठान</li> <li>२. प्रस्तार - दहा पलटे आणि तिहाई.</li> <li>३. साथ परण</li> <li>४. परण - पाच.</li> <li>५. रेला - तीन, सहा पलटे आणि तिहाई.</li> <li>६. तुकडे - पाच.</li> <li>७. चक्रदार - तीन (एक कमाली चक्रधार, एक फर्माईशी चक्रधार - तिस्र जाती</li> </ol> <p><b>ब) ताल बसंत-</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. उठान</li> <li>२. रेला - दोन</li> <li>३. साथपरण</li> <li>४. चक्रधार - एक फर्माईशी चक्रधार</li> </ol> <p><b>ब) विचिध प्रकारच्या गायन पद्धती बरोबर साथसंगत:</b><br/>ख्याल, ठुमरी / धृपद, धमार</p> <p><b>क) विविध वाद्यांबरोबर साथसंगत:</b><br/>व्हायोलिन, बासरी, सितार, संवादिनी</p> <p><b>ड) कथक नृत्याबरोबर साथसंगत:</b><br/>लखनौ घराणे, जयपूर घराणे, दोन्ही घराण्यांच्या पारंपारिक बंदिशींचा अभ्यास.</p> <p><b>सूचना-</b><br/>तबला -</p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. ख्याल आणि ठुमरी बरोबर साथ करणे, साथ संगतीची माहिती, गायन प्रकारांची माहिती, उपयोगात येणाऱ्या तालांचा अभ्यास.</li> <li>२. विविध वाद्यांबरोबर साथ करणे, साथ संगतीची माहिती, वाद्यांची माहिती, उपयोगात येणाऱ्या तालांचा अभ्यास.</li> <li>३. कथक नृत्याबरोबर साथ करणे, साथ संगतीची माहिती, कथक नृत्यातील विविध घराण्यांची माहिती, आणि लखनौ व जयपूर घराण्यांच्या पारंपारिक बंदिशीची माहिती व काही बंदिशींचा अभ्यास, कथक मध्ये उपयोगात येणाऱ्या तालांचा अभ्यास.</li> <li>४. वर उल्लेखित सर्व गायन, वादन, नृत्य प्रकारांची साथ करता येणे आवश्यक. त्यासाठी विद्यार्थ्यांने किमान दोन महिने संबंधित विषयातील कलाकारांकडे साथसंगतीचा अभ्यास करणे आवश्यक. परीक्षेच्या वेळी त्या त्या विषयातील कलाकारांचे पत्र महाविद्यालयात सादर करणे आवश्यक.</li> </ol> <p><b>पखवाज -</b></p> <ol style="list-style-type: none"> <li>१. धृपद - धमार गायकी बरोबर साथ करणे, साथ संगतीची माहिती, गायन प्रकारांची माहिती, उपयोगात येणाऱ्या तालांचा अभ्यास.</li> <li>२. विविध वाद्यांबरोबर साथ करणे, साथ संगतीची माहिती, वाद्यांची माहिती, उपयोगात येणाऱ्या तालांचा अभ्यास.</li> </ol> |
|--|--|--|---|

|   |                  |     |  |
|---|------------------|-----|--|
|   |                  |     | <p>३. कथक नृत्याबरोबर साथ करणे, साथ संगतीची माहिती, कथक नृत्यातील विविध घराण्यांची माहिती, लखनऊ व जयपूर घराण्यांच्या पारंपारिक बंदिशीची माहिती व काही बंदिशीचा अभ्यास, कथक मध्ये उपयोगात येणाऱ्या तालांचा अभ्यास.</p> <p>४. वर उल्लेखित सर्व गायन, वादन, नृत्य प्रकारांची साथ करता येणे आवश्यक. त्यासाठी विद्यार्थ्यांनी किमान दोन महिने संबंधित विषयातील कलाकारांकडे साथसंगतीचा अभ्यास करणे आवश्यक. परीक्षेच्या वेळी त्या त्या विषयातील कलाकारांचे पत्र महाविद्यालयात सादर करणे आवश्यक.</p> |
| ५ | मौखिक (तालवाद्य) | V62 | <p>प्रात्यक्षिक परीक्षेतील अभ्यासक्रमावर प्रश्न.<br/>सूचना –<br/>तबला / पखवाज</p> <p>१. ताल एकताल आणि मत्तताल संपूर्ण माहिती. हातावर टाळी देऊन दुगून, तीगुन आणि चौगुन म्हणणे.</p> <p>२. एकतालामधील तुकडे/चक्रधार मत्ततालामध्ये म्हणणे.</p> <p>३. साथ संगत म्हणजे काय ? याबद्दल माहिती.</p> <p>४. ख्याल, ठुमरी / धृपद, धमार गायन पद्धती, स्वरवाद्य, आणि कथक याबद्दल माहिती.</p> <p>५. साथीसाठी वापरल्या जाणाऱ्या तालांची माहिती आणि अभ्यास.</p>   |